

न्यूज़ टुडे

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री भारत की आधिकारिक यात्रा पर आए

यात्रा के दौरान दोनों देशों ने बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने की पुष्टि की तथा व्यापार व रक्षा जैसे विविध क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति व्यक्त की।

यात्रा के दौरान की गई महत्वपूर्ण वार्ताएं:

- ▶ मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के लिए वार्ता का शुभारंभ: पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापार समझौते और डिजिटल भुगतान क्षेत्रों में सहयोग के शीघ्र कार्यान्वयन के लिए वार्ता की शुरुआत की गई।
- ▶ पेशेवरों और कुशल श्रमिकों के लिए आवागमन संबंधी व्यवस्था पर वार्ता का शुभारंभ: इसका उद्देश्य नवाचार, नई और उभरती प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में सहभागिता का समर्थन करना है।
- ▶ न्यूजीलैंड ने इंडो-पैसिफिक ओशनस इनिशिएटिव (IPOI) और कोएलिशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर (CDRI) में शामिल हुआ।
 - ⊕ भारत ने 2019 में 14वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS) में IPOI को लॉन्च किया था। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय सहयोग और समुद्री क्षेत्रों की सुरक्षा, स्थिरता एवं विकास पर ध्यान केंद्रित करना है।
 - ⊕ CDRI को भारत ने 2019 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन में लॉन्च किया था। इसका उद्देश्य जलवायु और आपदा जोखिमों के प्रति नई व मौजूदा अवसरचतानात्मक प्रणालियों के लचीलेपन को बढ़ावा देना है।
- ▶ रक्षा अधिकृत आर्थिक संचालक- पारस्परिक मान्यता समझौते (AEO-MRA); वानिकी, शिक्षा, खेल, बागवानी जैसे क्षेत्रों में सहयोग पर समझौते आदि पर हस्ताक्षर किए गए।



भारत न्यूजीलैंड संबंध

- ▶ द्विपक्षीय व्यापार: दोनों देशों के बीच वित्त वर्ष 2023-24 में 1.75 बिलियन अमेरिकी डॉलर का व्यापार हुआ था। इसमें भारत का व्यापार अधिशेष 0.07 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।
 - ⊕ भारत ऊन, लोहा व इस्पात, फल एवं मेवे तथा एल्युमीनियम का आयात करता है।
 - ⊕ भारत फार्मास्यूटिकल्स/ दवाएं, यांत्रिक मशीनरी, मोती, कीमती पत्थर और धातुएं निर्यात करता है।
- ▶ लोगों के बीच आपसी संबंध और सांस्कृतिक संबंध:
 - ⊕ लगभग 8,000 भारतीय छात्र न्यूजीलैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
 - ⊕ दोनों देशों के बीच खेल के क्षेत्र विशेष रूप से क्रिकेट, हॉकी और पर्वतारोहण में संबंध काफी घनिष्ठ हैं।
- ▶ रक्षा सहयोग:
 - ⊕ इसमें नौ-सेनाध्यक्ष के दौरे, बंदरगाहों का दौरा, अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध के खिलाफ सीमा शुल्क सहयोग व्यवस्था 2024 आदि शामिल हैं।

SBI की एक रिपोर्ट के अनुसार, मुक्त व्यापार समझौते (FTAs) वैश्विक प्रशुल्क चुनौतियों के खिलाफ भारत को लोचशीलता प्रदान कर सकते हैं

रिपोर्ट में दावा किया गया है कि FTAs करने की भारत की व्यापार रणनीति इसके द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देगी और डिजिटल व्यापार में नए अवसर पैदा करेगी।

मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के बारे में

- ▶ FTA दो या दो से अधिक देशों या व्यापारिक गुटों के मध्य संपन्न किया जाने वाला एक व्यापारिक समझौता है। इसे मुख्य रूप से व्यापार की जाने वाली वस्तुओं या सेवाओं या दोनों पर आरोपित सीमा शुल्कों और गैर-प्रशुल्क बाधाओं को कम करने या समाप्त करने के लिए संपन्न किया जाता है।
- ▶ यह समझौता वस्तुओं (जैसे- कृषि एवं उद्योग से जुड़े उत्पाद) और सेवाओं (जैसे- बैंकिंग, कंस्ट्रक्शन, ट्रेडिंग आदि) के व्यापार को आसान बनाता है। इसके अलावा, बौद्धिक संपदा (IPR) जैसे मुद्दों को भी इसमें शामिल किया जाता है।

FTAs के लाभ

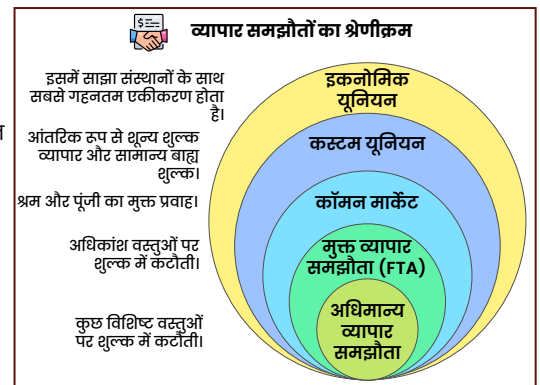
- ▶ विदेशी बाजारों तक आसान पहुंच: प्रशुल्क और गैर-प्रशुल्क बाधाएं खत्म होने से व्यापार बढ़ता है।
- ▶ लघु और मध्यम उद्यमों (SMEs) के लिए अवसर: प्रशुल्क संबंधी दी गई रियायतों से SMEs के उत्पादों के लिए निर्यात के अवसर बढ़ते हैं।
- ▶ अन्य: सीमा-पार व्यापार में बाधाएं कम होती हैं, निवेश को बढ़ावा मिलता है, ऑनलाइन व्यापार (ई-कॉमर्स) के नियमों में सुधार होता है, और क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा मिलता है।

भारत और FTAs

- ▶ SBI की रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने अपने निर्यातानुमुखी घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए मॉरीशस, UAE, ऑस्ट्रेलिया जैसे अपने व्यापारिक साझेदारों के साथ पिछले पांच वर्षों में 13 FTAs पर हस्ताक्षर किए हैं।
- ▶ उदाहरण: भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता, दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौता, आदि।
- ▶ भारत वर्तमान में यूनाइटेड किंगडम, कनाडा और यूरोपीय संघ के साथ FTAs पर वार्ता कर रहा है।

रिपोर्ट की अन्य बिंदुओं पर एक नजर

- ▶ विदेशी संस्थागत निवेश (FII) प्रवाह: वित्त वर्ष 2024 में भारत को 41 बिलियन डॉलर का FII निवेश प्राप्त हुआ था, जो वित्त वर्ष 2016 के बाद सबसे अधिक है।
- ▶ निर्यात विविधीकरण: भारत मूल्य संवर्धन, वैकल्पिक क्षेत्रों की खोज और नई आपूर्ति श्रृंखला एल्गोरिदम के साथ अपने निर्यात बास्केट में विविधता लाया है।



वैज्ञानिकों ने बीड (महाराष्ट्र) के एक गांव में उल्का पिंड गिरने की पुष्टि की

जब कोई उल्काभ वायुमंडल से गुजरते हुए पूरी तरह से नष्ट न होकर पृथ्वी के धरातल से टकराती है, तो उसे उल्कापिंड कहते हैं।

उल्कापिंडों के अध्ययन का महत्व

- सौर प्रणालियों को समझने में सहायक: इनमें सौर मंडल के इतिहास के प्रमाण मिल सकते हैं।
- भूवैज्ञानिक संरचना: ये ग्रहों एवं सौर मंडल के भू-रसायन विज्ञान और खनिज संरचना के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- ये ग्रहों के उद्भव और जीवन की उत्पत्ति एवं विकास को समझने मदद कर सकते हैं।

इनके अन्वेषण से संबंधित पहलें

- नासा ऑल स्काई फायरबॉल नेटवर्क: यह आकाश में शुक्र ग्रह से भी अधिक चमकीली उल्का का अवलोकन करने के लिए कैमरों का एक नेटवर्क है। इन अधिक चमकीली उल्काओं को फायरबॉल कहा जाता है।
- कनाडा का CMOR (कैनेडियन मिटियोर ऑर्बिट रडार): इसका उद्देश्य उल्काभ की गति, दिशा और अवस्थिति का पता लगाना है।

अंतरिक्ष में उल्काभ (Meteoroid)	वायुमंडल में प्रवेश के दौरान उल्का (Meteor)	धरातल से टकराने पर उल्कापिंड (Meteorite)
		
- ये आम तौर पर बड़े खगोलीय पिंडों से टूटकर अलग हुए अंतरिक्ष में मौजूद छोटे-छोटे चट्टानी पिंड होते हैं। जैसे ग्रह, क्षुद्रग्रह, धूमकेतु आदि। - ये चट्टानी और/या धातुमय दोनों रूप में हो सकते हैं। - इनका आकार क्षुद्रग्रहों से छोटा होता है और इनमें धूमकेतुओं की तुलना में कम जल एवं बर्फ होती है।	- ये तब बनते हैं, जब उल्कापिंड पृथ्वी या किसी ग्रह के वायुमंडल में प्रवेश करते हैं। - इन्हें 'शूटिंग स्टार' कहा जाता है, क्योंकि ये वायुमंडलीय में तेज गति से प्रवेश करते हुए घर्षण के दबाव के कारण जल जाते हैं। 'उल्का वर्षा' एक खगोलीय घटना है, जिसमें एक लघु अवधि के दौरान कई उल्काएं पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करती हैं।	- जब कोई उल्काभ वायुमंडल से गुजरते हुए पूरी तरह से नष्ट न होकर धरातल से टकराती है, तो उसे उल्कापिंड कहते हैं। - प्रकार: इसकी संरचना चट्टानी, लौहयुक्त, और चट्टानी-लौहयुक्त हो सकती है। - इसका बाहरी आवरण गहरे रंग का और जला हुआ होता है तथा तापीय अपक्षय के कारण इसकी सतह खुरदरी, चिकनी या थंबप्रिंट जैसी होती है। - यह धरातल से टकराकर 'क्रेटर' बना सकता है। उदाहरण के लिए लोनार झील (महाराष्ट्र)।

नोट 1: पृथ्वी पर 50,000 से अधिक उल्कापिंड पाए गए हैं। इनमें से 99.8% क्षुद्रग्रहों के खंड हैं। (स्रोत-नासा)
नोट 2: भारत में, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GIS) देश में गिरे सभी उल्कापिंडों का संरक्षक है।

फ्रांस के मोसेले क्षेत्र में 92 ट्रिलियन डॉलर मूल्य का व्हाइट हाइड्रोजन भंडार खोजा गया

यह 46 मिलियन टन का भंडार स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्रक में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

व्हाइट हाइड्रोजन के बारे में

- उत्पत्ति: तेल और गैस की तरह व्हाइट हाइड्रोजन भी प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। यह कठोर चट्टानों में निरंतर जारी भू-रसायनिक अभिक्रियाओं से बनता है।
- विशेषताएं: इसके अणु हाइड्रोजन अणुओं से छोटे और हल्के होते हैं। इससे ये अणु आसानी से चट्टानों से बाहर निकल जाते हैं।
- वर्तमान स्थिति: वर्तमान में व्हाइट हाइड्रोजन उद्योग अपनी प्रारंभिक अवस्था में है तथा इसमें केवल कुछ ही नवाचारकर्ता सक्रिय हैं।

व्हाइट हाइड्रोजन के लाभ

- प्राकृतिक रूप से उपलब्ध: हाइड्रोजन के अन्य प्रकारों के विपरीत, इसके लिए औद्योगिक स्तर पर उत्पादन की आवश्यकता नहीं होती है।
- पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर: इससे कार्बन उत्सर्जित नहीं होता है।
- लागत प्रभावी: इसमें अक्षम ऊर्जा रूपांतरण या विनिर्माण प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती है। साथ ही, अंतिम उपयोगकर्ता बाजारों के निकट स्थित भण्डारों से बड़े पैमाने पर इसका उत्पादन किया जा सकता है।
- हीलियम के साथ सह-अस्तित्व: यह स्थिति व्हाइट हाइड्रोजन के वाणिज्यिक दोहन के लिए एक महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है।

हाइड्रोजन के अन्य प्रकार		
प्रकार	उत्पादन	मुख्य विशेषता
 ग्रीन हाइड्रोजन	इसका उत्पादन सौर या पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त स्वच्छ विद्युत का उपयोग करके किया जाता है।	उत्पादन प्रक्रिया महंगी होती है।
 ब्लू हाइड्रोजन	इसका उत्पादन स्टीम रिफॉर्मिंग प्रक्रिया के तहत प्राकृतिक गैस से किया जाता है।	'निम्न-कार्बन हाइड्रोजन', क्योंकि स्टीम रिफॉर्मिंग प्रक्रिया से कुछ ग्रीनहाउस गैसों उत्सर्जित होती हैं।
 ग्रे हाइड्रोजन	इसका उत्पादन स्टीम मीथेन रिफॉर्मेशन का उपयोग करके प्राकृतिक गैस या मीथेन से किया जाता है।	यह सबसे आम प्रकार है, लेकिन इसमें ग्रीनहाउस गैसों को कैप्चर नहीं किया जाता है।
 ब्लैक और ब्राउन हाइड्रोजन	इसका उत्पादन 'गैसीकरण' प्रक्रिया के माध्यम से जीवाश्म ईंधन से किया जाता है।	पर्यावरण के लिए अत्यधिक हानिकारक।
 पिंक हाइड्रोजन	इसका उत्पादन परमाणु ऊर्जा द्वारा संचालित इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से किया जाता है।	इसे पर्पल या रेड हाइड्रोजन भी कहा जाता है। इसका उपयोग ऊर्जा भंडारण माध्यम के रूप में किया जाता है।

सरकार क्रिएटर इकोनॉमी को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से 1 बिलियन डॉलर का फंड स्थापित करेगी

केंद्र सरकार द्वारा घोषित इस फंड का इस्तेमाल डिजिटल कंटेंट क्रिएटर्स को अपने कौशल को बेहतर बनाने, अपने प्रोडक्शन को अपग्रेड करने और वैश्विक बाजारों में विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए किया जाएगा।

- क्रिएटिव और डिजिटल टेक्नोलॉजी में विशेषज्ञता को बढ़ावा देने के लिए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजी (IICT) की स्थापना के लिए भी धन आवंटित किया गया है।

क्रिएटर इकोनॉमी क्या है?

- यह एक तेजी से संवृद्धि करने वाला क्षेत्र है। इसमें कलाकार, शिक्षक, गेमिंग स्ट्रीमर, वीडियो निर्माता, पॉडकास्टर और अन्य रचनात्मक लोग शामिल होते हैं। ये सभी लोग यूट्यूब और इंस्टाग्राम जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अपने क्रिएटिव कंटेंट्स से आय अर्जित करते हैं।
- वर्ष 2023 में वैश्विक स्तर पर क्रिएटर्स इकोनॉमी का आकार 250 बिलियन डॉलर था। 2027 में इसका आकार दोगुना (480 बिलियन डॉलर) होने की उम्मीद है।
- यह 'अर्रेंज इकोनॉमी' (या 'क्रिएटिव इकोनॉमी') के अंतर्गत एक उभरता हुआ क्षेत्र है। अर्रेंज इकोनॉमी में एडवर्टाइजिंग, आर्किटेक्चर, कला, संगीत, फिल्म निर्माण आदि शामिल हैं।

भारत के लिए क्रिएटर्स इकोनॉमी का महत्त्व

- GDP में योगदान: उदाहरण के लिए- अकेले यूट्यूब के इकोसिस्टम ने 2022 में भारत के GDP में 10,000 करोड़ रुपये से अधिक का योगदान दिया था।
- वर्ष 2024 में भारत की अर्रेंज इकोनॉमी का मूल्य 30 बिलियन डॉलर था, जिसने भारत की GDP में लगभग 2.5% का योगदान दिया है।
- रोजगार सृजन: यह ब्रांड कोलैबोरेशन, प्रायोजित कंटेंट, व्यापारिक बिक्री आदि के माध्यम से लाखों क्रिएटर्स, इन्फ्लुएंसर्स और ज्ञान पेशेवरों को आजीविका प्रदान करता है।
- सॉफ्ट पावर: संगीत, नृत्य, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में तैयार होने वाले कंटेंट ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना एवं ख्याति प्राप्त की है। इससे भारत की सॉफ्ट पावर बढ़ी है एवं विदेशी राजस्व प्राप्त हुआ है।

भारत की क्रिएटर्स इकोनॉमी के समक्ष मौजूद चुनौतियां

- डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में मौजूद कमियां: जैसे इंटरनेट तक सभी लोगों की सामान रूप से पहुंच का अभाव, भारतनेट के शुरू होने की धीमी गति, डेटा/ डिवाइस की उच्च लागत और कम डिजिटल साक्षरता आदि विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के क्रिएटर्स के लिए बाधाएं हैं।
- नीतिगत एवं विनियामकीय चुनौतियां: उदाहरण के लिए अस्पष्ट कराधान, गोपनीयता संबंधी कानूनों के अनुपालन का बोझ, कमजोर कॉपीराइट प्रवर्तन, और प्लेटफॉर्म नीति में बदलाव क्रिएटर्स के लिए अनिश्चितता पैदा करते हैं।
- वित्तीय बाधाएं: उदाहरण के लिए- विज्ञापन से प्राप्त होने वाला कम राजस्व, उच्च अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म भुगतान शुल्क और पूंजी तक पहुंच की कमी क्रिएटर्स के लिए वित्तीय स्थिरता एवं विकास को बाधित करती है।

अरुणाचल प्रदेश ने "राज्य जैव विविधता रणनीति और कार्रवाई (SBSAP): एक जन योजना" शुरू की

- यह जिला स्तरीय कार्य योजनाओं को शामिल करने वाली पहली ऐसी SBSAP है, जो राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति और कार्य योजना (NBSAP) तथा कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क (KMGBF) के अनुरूप है।
- KMGBF को जैव विविधता अभिसमय के CoP-15 में अपनाया गया था। KMGBF में तत्काल कार्रवाई के लिए 23 कार्रवाई-उन्मुख वैश्विक टारगेट शामिल हैं, जिन्हें 2030 तक हासिल करना है।

जैव विविधता संरक्षण में राज्य सरकारों की भूमिका

- प्रभावी रूप में कार्य करना: ये वैश्विक जैव विविधता लक्ष्यों को स्थानीय आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप ढालने में सक्षम होती हैं।
- स्थानीय ज्ञान और अनुभव: इनके द्वारा जमीनी स्तर पर सीखे गए अनुभव शासन के उच्चतर स्तरों के साथ साझा किए जाते हैं।
- जमीनी वास्तविकता को बेहतर रूप से समझना: राज्य सरकारें अपने क्षेत्रों में प्रणालीगत बदलाव के समक्ष मौजूद बाधाओं को समझने और उन पर कार्रवाई करने में सबसे मजबूत स्थिति में होती हैं।
- बेहतर निगरानी और रिपोर्टिंग: ये कार्य स्थानीय स्तर पर अधिक प्रभावी ढंग से किए जा सकते हैं।

जैव विविधता संरक्षण में राज्य सरकारों की भागीदारी को बढ़ावा देने वाली पहलें

- वैश्विक स्तर पर:
 - जैव विविधता अभिसमय (CBD) के तहत जैव विविधता के लिए उप-राष्ट्रीय सरकारों, शहरों और अन्य स्थानीय प्राधिकरणों पर कार्य योजना (2021-2030) शुरू की गई है।
 - अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN): इसने अपने सदस्यों के लिए स्थानीय सरकारों की एक नई श्रेणी की शुरुआत की है।
- भारत में:
 - भारत ने अपने अपडेटेड NBSAP (2024-2030) में राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण, राज्य जैव विविधता बोर्ड और स्थानीय जैव विविधता प्रबंधन समितियों को शामिल करते हुए एक त्रिस्तरीय संस्थागत संरचना का प्रावधान किया है।
 - CBD के अनुच्छेद 6 के अनुसार प्रत्येक पक्षकार को NBSAP तैयार करना अनिवार्य है।
- केस स्टडी:
 - पक्के टाइगर रिजर्व (अरुणाचल प्रदेश) में हॉर्नबिल नेस्ट एडॉप्शन पहल;
 - आईची (जापान) जैव विविधता रणनीति 2020 में "पारिस्थितिकी नेटवर्क के निर्माण" पर ध्यान केंद्रित किया गया है, आदि।

अन्य सुर्खियां

ऑनलाइन आश्वासन निगरानी प्रणाली

केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री ने सरकारी आश्वासनों के प्रबंधन में ऑनलाइन आश्वासन निगरानी प्रणाली (OAMS) की भूमिका को उजागर किया।

ऑनलाइन आश्वासन निगरानी प्रणाली (OAMS) के बारे में

- यह संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है। यह प्लेटफॉर्म सुनिश्चित करता है कि संसद में मंत्रियों द्वारा दिए गए आश्वासनों पर व्यवस्थित रूप से नजर रखी जाए, निगरानी की जाए और उन्हें पूरा किया जाए।
- सदन में प्रश्नों के उत्तर देने या बहस के दौरान मंत्रियों द्वारा आश्वासन (वादों, वचनबद्धताओं आदि के रूप में) दिए जाते हैं।
- सूचना उपलब्ध न होने के कारण दिए गए आश्वासन तीन माह की अवधि के भीतर पूरे किए जाने होते हैं।
- संसदीय कार्य मंत्रालय को भारत सरकार (कार्य आवंटन) नियम, 1961 के अंतर्गत आश्वासनों के कार्यान्वयन का कार्य सौंपा गया है।



भारतीय मानक ब्यूरो (BIS)

BIS ने असुरक्षित व गैर-प्रमाणित उत्पाद बेचने वाले ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर कार्रवाई की।

BIS के बारे में (मुख्यालय: नई दिल्ली)

- यह भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम, 2016 के तहत स्थापित भारत का एक राष्ट्रीय मानक निकाय है।
- उद्देश्य: वस्तुओं के मानकीकरण, मार्किंग और गुणवत्ता प्रमाणन संबंधी गतिविधियों का सामंजस्यपूर्ण विकास करना।
- लाभ: सुरक्षित और विश्वसनीय गुणवत्ता वाले सामान उपलब्ध होते हैं; उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य संबंधी खतरों को न्यूनतम करता है; निर्यात को बढ़ावा देता है; आयात पर निर्भरता घटाता है, आदि।
- ब्यूरो के सदस्य: इसमें 25 सदस्य होते हैं, जो केंद्र और राज्य सरकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं।



प्रधान मंत्री इंटरनशिप योजना

वित्त मंत्री ने प्रधान मंत्री इंटरनशिप योजना (PMIS) के लिए एक समर्पित मोबाइल ऐप लॉन्च किया। प्रधान मंत्री इंटरनशिप योजना (PMIS) के बारे में

- शुरुआत: इसे 2024 में कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय ने शुरू किया था।
- उद्देश्य: अगले 5 वर्षों में 1 करोड़ युवाओं (21 से 24 वर्ष) को भारत की शीर्ष 500 कंपनियों में इंटरनशिप का अवसर प्रदान करना।
 - ⊕ अकादमिक शिक्षा और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच अंतर को कम करना।
 - ⊕ व्यावहारिक अनुभव के जरिए कौशल विकास और व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहन देकर प्रतिभागियों की रोजगार क्षमता को बढ़ावा देना।
- अवधि और पारिश्रमिक: इस योजना में 12 माह की अवधि के लिए सशुल्क इंटरनशिप दी जाएगी। इसमें प्रति इंटरन 5,000 रुपये की मासिक वित्तीय सहायता दी जाएगी। इसके अलावा, इसमें 6,000 रुपये की एकमुश्त वित्तीय सहायता देने का भी प्रावधान किया गया है।



बोडो जनजाति

केन्द्रीय गृह मंत्री के अनुसार, 2020 के बोडो शांति समझौते की 80% से अधिक शर्तें लागू कर दी गई हैं।

- इस समझौते पर केंद्र, असम सरकार और बोडो समूहों ने हस्ताक्षर किए हैं। इसके कारण बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (BTR) को अधिक स्वायत्तता मिली है।

बोडो जनजाति के बारे में

- बोडो असम में सबसे बड़ा नृजातीय-भाषाई समूह है।
- यह मुख्य रूप से बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र में रहता है।
 - ⊕ बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र असम में एक स्वायत्त क्षेत्र है, जिसमें चार जिले हैं।
- भाषा: बोडो (या बोरो)। यह भारत की 22 अनुसूचित भाषाओं में से एक है।
- संवैधानिक स्थिति: इसे संविधान की पांचवी और छठी अनुसूची के तहत एक मैदानी जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त है।



नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG)

सुप्रीम कोर्ट ने CAG की नियुक्ति में तटस्थ प्रक्रिया अपनाने के लिए दायर जनहित याचिका पर केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया।

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) के बारे में

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 148-151 भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक से संबंधित हैं।
- नियुक्ति: राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
 - ⊕ अपने पद पर रहने के पश्चात वह भारत सरकार या किसी राज्य के अधीन किसी अन्य पद के लिए पाल नहीं होता है।
- वेतन और सेवा की अन्य शर्तें: संसद द्वारा कानून के जरिये या द्वितीय अनुसूची में निर्दिष्ट होने तक निर्धारित की जाती हैं।
- पद से हटाना: इसे पद से केवल उसी रीति से और उन्ही आधारों पर हटाया जा सकता है, जिस रीति से तथा जिन आधारों पर सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश को हटाया जाता है।
- पद की शपथ दिलाना: राष्ट्रपति या उसके द्वारा इस हेतु नियुक्त किसी व्यक्ति द्वारा।
- अनुच्छेद 149 के अनुसार CAG की शक्तियां और कर्तव्य: नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक संघ के और राज्यों के तथा किसी अन्य प्राधिकरण या निकाय के लेखाओं के संबंध में ऐसे कर्तव्यों का पालन करेगा या ऐसी शक्तियों का प्रयोग करेगा, जिन्हें संसद द्वारा बनाए गए कानून के जरिये उसे सौंपी जाएं।



करैकल

राजस्थान के मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व से करैकल का पहला फोटोग्राफिक रिकॉर्ड साझा किया गया। करैकल के बारे में

- स्थानिक: यह भारत सहित अफ्रीका, मध्य-पूर्व, मध्य एशिया और दक्षिण एशिया के कई देशों में पाया जाता है।
- विशेषताएं: यह मुख्य रूप से रात्रिचर बिल्ली की एक प्रजाति है। इसके नुकीले और काले कान इसकी पहचान है।
 - ⊕ “करैकल” नाम तुर्की शब्द “करैकुलक” से आया है, जिसका अर्थ “काले कान” होता है।
- यह सरकार द्वारा संचालित प्रजाति पुनर्प्राप्ति कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल 22 प्रजातियों में से एक है।
- संरक्षण की स्थिति:
 - ⊕ IUCN: लीस्ट कंसर्न।
 - ⊕ भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972: अनुसूची-I में सूचीबद्ध।
 - ⊕ CITES: परिशिष्ट-I (एशियाई आबादी) में सूचीबद्ध।



IUCN ग्रीन लिस्ट

IUCN ग्रीन लिस्ट में चार नए स्थल जोड़े गए हैं। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- सऊदी अरब का शरान नेचर रिजर्व और किंग अब्दुलअजीज रॉयल नेचर रिजर्व,
- जॉर्डन का अकाबा मरीन रिजर्व, और
- संयुक्त अरब अमीरात (UAE) का सिर बु नैर संरक्षित क्षेत्र।

IUCN ग्रीन लिस्ट के बारे में

- यह प्रमाणन से संबंधित वैश्विक कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य प्रभावी, न्यायसंगत और सफल संरक्षित एवं परिरक्षित क्षेत्र सुनिश्चित करना तथा उन्हें बढ़ावा देना है।
- फोकस: संरक्षण संबंधी प्रबंधन में सर्वोत्तम पद्धतियों को उजागर करना तथा प्रगति के लिए मानक निर्धारित करना।
- उद्देश्य:
 - ⊕ संरक्षित एवं परिरक्षित क्षेत्रों की संख्या में वृद्धि करना, ताकि उनका प्रबंधन प्रभावी एवं समतुल्यपूर्ण ढंग से किया जा सके।
 - ⊕ संरक्षण संबंधी परिणाम सुनिश्चित करना। इसके तहत SDG-15 “स्थलीय जीवन” के संरक्षण में योगदान देना और जैव विविधता अभिसमय (CBD) के आईसी लक्ष्य 11 को हासिल करने की दिशा में कार्य करना शामिल है।



माइक्रोप्रोसेसर

इसरो और चंडीगढ़ की सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला (SCL) ने अंतरिक्ष संबंधी उपयोग के लिए 32-बिट माइक्रोप्रोसेसर VIKRAM3201 और KALPANA3201 विकसित किए हैं।

- VIKRAM3201 प्रक्षेपण यानों की कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों में उपयोग के लिए पहला पूर्णतः “भारत में निर्मित” 32-बिट माइक्रोप्रोसेसर है।

माइक्रोप्रोसेसर के बारे में:

- यह एक बहुउद्देशीय, प्रोग्रामेबल, क्लॉक-ड्राइवन, और रजिस्टर-बेस्ड इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है।
- इसमें लाखों छोटे ट्रांजिस्टर्स, रेजिस्टर्स और डायोड एक अर्धचालक पदार्थ (IC चिप्स) पर जुड़े होते हैं। ये सभी सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (CPU) के प्रमुख घटक होते हैं।
- घटक: अर्थमेटिक लॉजिक यूनिट (ALU), कंट्रोल यूनिट और रजिस्टर ऐरें।
- कार्य: मेमोरी जैसी स्टोरेज प्रणाली से बाइनरी निर्देशों को समझाना, बाइनरी डेटा को इनपुट के रूप में एक्सेस करना, डेटा को प्रोसेस करना और आउटपुट प्रदान करना।
- उदाहरण: इंटेल 4004, 8085, पेंटियम आदि।

सुर्खियों में रहे स्थल



यमन (राजधानी: सना)

संयुक्त राज्य अमेरिका ने यमन में हूती विद्रोहियों पर नए हवाई हमले किए।

यमन के बारे में

- भौगोलिक अवस्थिति:
 - ⊕ अवस्थिति: यह देश मध्य-पूर्व में, अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी सिरे पर स्थित है।
 - ⊕ भूमि सीमाएं: इसके उत्तर में सऊदी अरब, तथा पूर्व में ओमान स्थित है।
 - ⊕ समुद्री सीमाएं: इसके पश्चिम में लाल सागर, दक्षिण में अदन की खाड़ी, तथा दक्षिण-पूर्व में अरब सागर अवस्थित है।
 - ⊕ सामरिक अवस्थिति: यह बाब अल-मंदेब जलडमरूमध्य के किनारे पर स्थित है, जो लाल सागर और अदन की खाड़ी को जोड़ता है। यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक समुद्री मार्ग है।
 - ⊕ यमन का सोकोट्रा द्वीपसमूह हिंद महासागर में स्थित है।
- भौगोलिक विशेषताएं:
 - ⊕ जलवायु: इसके पश्चिमी तट पर गर्म और आर्द्र जलवायु; मानसून से प्रभावित पश्चिमी पर्वतीय भागों में समशीतोष्ण जलवायु; तथा पूर्व भाग में रूब अल-खली मरुस्थल के कारण शुष्क जलवायु पाई जाती है।
 - ⊕ प्राकृतिक संसाधन: पेट्रोलियम, मछली, सेंधा नमक, संगमरमर आदि।

